

भारत सरकार
पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय
राज्य सभा
अतारांकित प्रश्न सं. 666
8/02/2024 को उत्तर दिए जाने के लिए

भारत का भूकम्प प्रवण भू-भाग

666. श्री के. आर. सुरेश रेड्डी:

क्या पृथ्वी विज्ञान मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

- (क) क्या सरकार ने इस तथ्य का संज्ञान लिया है कि भारत का 59 प्रतिशत भू-भाग अलग-अलग तीव्रता वाला भूकम्प प्रवण क्षेत्र है; और
- (ख) यदि हाँ, तो देश के सभी चार भूकम्पीय क्षेत्रों का चौकस रहना सुनिश्चित करने के लिए सरकार द्वारा की जाने वाली प्रस्तावित पहलों का ब्यौरा क्या है?

उत्तर

पृथ्वी विज्ञान मंत्री
(श्री किरिन रीजीजू)

- (क) जी हां। भारतीय मानक ब्यूरो द्वारा पूरे देश को चार भूकंप क्षेत्रों V, IV, III एवं II में वर्गीकृत किया गया है, जिसमें देश की लगभग 59% भूमि विभिन्न तीव्रता वाले भूकंपों के प्रति संवेदनशील है। क्षेत्र V सबसे अधिक सक्रिय क्षेत्र को दर्शाता है, वहीं क्षेत्र II सबसे कम सक्रिय क्षेत्र को दर्शाता है। विशिष्ट रूप से, क्षेत्र V में 11%, क्षेत्र IV में 18%, क्षेत्र III में 30% तथा शेष क्षेत्र II में आता है। विभिन्न क्षेत्रों से विस्तृत रूप से संबद्ध मॉडीफाइड मरकैली तीव्रता, जो जमीन पर भूकंप के प्रभाव का मापन करती है, नीचे दी गई है:

भूकंपीय क्षेत्र

मोडीफाइड मरकैल पैमाने पर तीव्रता

II (निम्न तीव्रता क्षेत्र)	VI (या कम)
III (औसत तीव्रता क्षेत्र)	VII
IV (गंभीर तीव्रता क्षेत्र)	VIII
V (अति गंभीर तीव्रता क्षेत्र)	IX (तथा अधिक)

- (ख) पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय के अधीन राष्ट्रीय भूकम्प विज्ञान केन्द्र देश में और देश के आसपास भूकम्प की निगरानी करने के लिए भारत सरकार की नोडल एजेंसी है। इस उद्देश्य के लिए राष्ट्रीय भूकम्प विज्ञान केन्द्र ने एक राष्ट्रीय भूकम्प-विज्ञानिक नेटवर्क बनाया हुआ है, जिसमें देशभर की 159 वेधशालाएं शामिल हैं। देश में और देश के पड़ोसी भागों में भूकंप की घटना के तुरंत बाद, राष्ट्रीय भूकंप विज्ञान केंद्र तत्काल उपयुक्त शमन कार्रवाई करने के लिए विभिन्न डिजिटल प्लेटफॉर्म के माध्यम से जानकारी प्रसारित करता है। देश के भूकंपीय क्षेत्र वाले सभी भागों के लिए 100 अतिरिक्त वेधशालाओं के साथ इस नेटवर्क को अपग्रेड करने की योजना पर कार्य किया जा रहा है जिससे प्रतिक्रिया समय तथा संसूचन क्षमताओं में सुधार हो सके।

इसके अतिरिक्त, देश के सभी भूकंपीय क्षेत्र को कवर करने वाले राष्ट्रीय भूकंप विज्ञान केंद्र के निरंतर चल रहे भूकंपनीय सूक्ष्मक्षेत्रीकरण अध्ययन विभिन्न शहरों यथा जबलपुर, गुवाहाटी, बैंगलोर, सिक्किम, अहमदाबाद, गांधीधाम-कांडला, दिल्ली तथा कोलकाता के लिए पूरे कर लिए गए हैं। 12 और शहरों यथा कोयंबटूर, चेन्नई, भुवनेश्वर, मैंगलोर, आगरा, अमृतसर, लखनऊ, कानपुर, वाराणसी, पटना, धनबाद तथा मेरठ में सूक्ष्मक्षेत्रीकरण का कार्य सक्रिय रूप से चल रहा है।

उपर्युक्त के अलावा, भारतीय मानक ब्यूरो ने भूकंप-प्रतिरोधी निर्माण की दिशा में व्यापक निर्माण दिशानिर्देश प्रदान किए हैं, जिसमें देश के विविधतापूर्ण भूकंपनीय क्षेत्रों पर विशेष रूप से ध्यान केंद्रित किया गया है। साथ ही, राष्ट्रीय आपदा प्रबन्धन प्राधिकरण जिसे आपदा प्रबंधन के लिए नीतियां, योजनाएं तथा दिशानिर्देश बनाने का अधिदेश दिया गया है, ने भूकंप पर व्यापक दिशानिर्देश प्रकाशित किए हैं, जिसका उद्देश्य भूकंपीय घटनाओं की स्थिति में देश में तैयारी तथा प्रतिक्रिया कार्यनीतियों में सहायता करना है। इन दिशानिर्देशों के साथ ही, विशेष रूप से उच्च जोखिम भूकंपीय क्षेत्र में, राष्ट्रीय आपदा प्रबन्धन प्राधिकरण द्वारा आधिकारिक और जनता दोनों के लिए, नियमित प्रशिक्षण कार्यक्रम एवं पूर्वाभ्यास आयोजित किए जाते हैं ताकि भूकंपों के दौरान पर्याप्त सामुदायिक लचीलापन तथा एक दक्ष प्रतिक्रिया तंत्र सुनिश्चित किया जा सके।
